

गउड़ी सुखमनी मः ५ ॥

सलोकु ॥

१६ सतिगुर प्रसादि ॥

आदि गुरए नमह ॥

जुगादि गुरए नमह ॥

सतिगुरए नमह ॥

स्री गुरदेवए नमह ॥१॥

असटपदी ॥

सिमरउ सिमरि सिमरि सुखु पावउ ॥  
कलि कलेस तन माहि मिटावउ ॥  
सिमरउ जासु बिसुंभर एकै ॥  
नामु जपत अगनत अनेकै ॥  
वेद पुरान सिंम्रित सुधाख्यर ॥  
कीने राम नाम इक आख्यर ॥  
किनका एक जिसु जीअ बसावै ॥  
ता की महिमा गनी न आवै ॥  
काँखी एकै दरस तुहारो ॥  
नानक उन संगि मोहि उधारो ॥१॥  
सुखमनी सुख अंम्रित प्रभ नामु ॥  
भगत जना कै मनि बिस्राम ॥ रहाउ ॥

प्रभ कै सिमरनि गरभि न बसै ॥  
प्रभ कै सिमरनि दूखु जमु नसै ॥  
प्रभ कै सिमरनि कालु परहरै ॥  
प्रभ कै सिमरनि दुसमनु टरै ॥  
प्रभ सिमरत कछु बिघनु न लागै ॥  
प्रभ कै सिमरनि अनदिनु जागै ॥  
प्रभ कै सिमरनि भउ न बिआपै ॥  
प्रभ कै सिमरनि दुखु न संतापै ॥  
प्रभ का सिमरनु साध कै संगि ॥  
सरब निधान नानक हरि रंगि  
॥२॥

प्रभ कै सिमरनि रिधि सिधि नउ निधि ॥  
प्रभ कै सिमरनि गिआनु धिआनु ततु बुधि ॥  
प्रभ कै सिमरनि जप तप पूजा ॥  
प्रभ कै सिमरनि बिनसै दूजा ॥  
प्रभ कै सिमरनि तीरथा इसनानी ॥  
प्रभ कै सिमरनि दरगह मानी ॥  
प्रभ कै सिमरनि होइ सु भला ॥  
प्रभ कै सिमरनि सुफल फला ॥  
से सिमरहि जिन आपि सिमराए ॥  
नानक ता कै लागउ पाए  
॥३॥

प्रभ का सिमरनु सभ ते ऊचा ॥  
प्रभ कै सिमरनि उधरे मूचा ॥  
प्रभ कै सिमरनि त्रिसना बुझै ॥  
प्रभ कै सिमरनि सभु किछु सुझै ॥  
प्रभ कै सिमरनि नाही जम त्रासा ॥  
प्रभ कै सिमरनि पूरन आसा ॥  
प्रभ कै सिमरनि मन की मलु जाइ ॥  
अंम्रित नामु रिद माहि समाइ ॥  
प्रभ जी बसहि साध की रसना ॥  
नानक जन का दासनि दसना  
॥४॥

प्रभ कउ सिमरहि से धनवंते ॥  
प्रभ कउ सिमरहि से पतिवंते ॥  
प्रभ कउ सिमरहि से जन परवान ॥  
प्रभ कउ सिमरहि से पुरख प्रधान ॥  
प्रभ कउ सिमरहि सि बेमुहताजे ॥  
प्रभ कउ सिमरहि सि सरब के राजे ॥  
प्रभ कउ सिमरहि से सुखवासी ॥  
प्रभ कउ सिमरहि सदा अबिनासी ॥  
सिमरन ते लागे जिन आपि दइआला ॥  
नानक जन की मंगै खाला  
॥५॥

प्रभ कउ सिमरहि से परउपकारी ॥  
प्रभ कउ सिमरहि तिन सद बलिहारी ॥  
प्रभ कउ सिमरहि से मुख सुहावे ॥  
प्रभ कउ सिमरहि तिन सूखि बिहावै ॥  
प्रभ कउ सिमरहि तिन आतमु जीता ॥  
प्रभ कउ सिमरहि तिन निरमल रीता ॥  
प्रभ कउ सिमरहि तिन अनद घनेरे ॥  
प्रभ कउ सिमरहि बसहि हरि नेरे ॥  
संत क्रिपा ते अनदिनु जागि ॥  
नानक सिमरनु पूरै भागि  
॥६॥

प्रभ कै सिमरनि कारज पूरे ॥  
प्रभ कै सिमरनि कबहु न झूरे ॥  
प्रभ कै सिमरनि हरि गुन बानी ॥  
प्रभ कै सिमरनि सहजि समानी ॥  
प्रभ कै सिमरनि निहचल आसनु ॥  
प्रभ कै सिमरनि कमल बिगासनु ॥  
प्रभ कै सिमरनि अनहद झुनकार ॥  
सुखु प्रभ सिमरन का अंतु न पार ॥  
सिमरहि से जन जिन कउ प्रभ मइआ ॥  
नानक तिन जन सरनी पइआ  
॥७॥



हरि सिमरनु करि भगत प्रगटाए ॥  
हरि सिमरनि लगि बेद उपाए ॥  
हरि सिमरनि भए सिध जती दाते ॥  
हरि सिमरनि नीच चहु कुंट जाते ॥  
हरि सिमरनि धारी सभ धरना ॥  
सिमरि सिमरि हरि कारन करना ॥  
हरि सिमरनि कीओ सगल अकारा ॥  
हरि सिमरन महि आपि निरंकारा ॥  
करि किरपा जिसु आपि बुझाइआ ॥  
नानक गुरमुखि हरि सिमरनु तिनि पाइआ  
॥८॥१॥